विश्व न्याय मंदिर
बहाई विश्व केन्द्र
रिज़वान 2002

विश्व के बहाइयों को

परम प्रिय मित्रगण

रचनात्मक युग के इस पाँचवे कालखंड के आरम्भ में प्रभुधर्म के अंदर और बाहर की घटनाओं का प्रवाह जो दृश्य उपस्थित करता है वह, वास्तव में, चौंका देने वाला है। प्रभुधर्म के अंदर, कार्मल पर्वत पर बने भवनों का निर्माण पूरा होने पर पिछले वर्ष मई में आयोजित समारोह के ऐतिहासिक महत्व ने हमारे मन-प्राण जुड़ा दिये। इससे पहले किसी भी बहाई समारोह को उपग्रह प्रसारण और मीडिया के ज़रिये दुनिया भर में इतना व्यापक प्रचार-प्रसार नहीं मिला था। विस्मय से भर देने वाली भव्यता के इस दृश्य ने जैसे ही कार्मल की पाती के साकार रूप लेने के ताज़ा प्रमाण दुनिया के सामने प्रस्तुत किये, वैसे ही, अनजानेपन से लगातार बाहर आ रहे बहाउल्लाह के युगधर्म ने नये उत्कर्ष की और छलांग लगाई। और इस प्रकार, इस युग के इतिहास में एक अमिट छाप अंकित की गई।

हमारे अदम्य प्रभुधर्म को अनुप्राणित करने वाली ऊर्जा का एक अन्य प्रमाण, पिछले रिज़वान शुरू हुई पाँच वर्षीय योजना के प्रारम्भ से ही काम कर रही आतंरिक प्रक्रिया में आई गति में मिलता है। इसलिये, राष्ट्रीय अधिवेशनों में आये प्रतिनिधियों और दुनिया भर में फेले बहाउल्लाह के अनुयायियों का हम आह्वान करते हैं कि योजना के पहले वर्ष में सम्पन्न कार्यों पर विचार करें, जिनसे अनगिनत सम्भावनाओं के प्रति आशावान बनने की हमें प्रेरणा मिलेगी।

आवश्यकता के अनुरूप दायित्वों को बखूबी निभाते हुये राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभायें, रिज़वान के पहले और तुरंत बाद, महाद्वीपीय सलाहकारों के साथ अनेक योजना-सत्रों में व्यस्त हो गईं। इनसे समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की नई प्रक्रिया की उत्साही शुरूआत का रास्ता तैयार हुआ। प्रत्येक राष्ट्रीय समुदाय में बहाई संस्थाओं ने अपने-अपने देश को विकास-कार्यों के लिये अच्छी तरह व्यवस्थित किये जा सकने वाले समुदाय-समूहों में वर्गीकृत करने का काम शुरू कर दिया। कोई 150 देशों से जैसी रिपोर्ट मिली है, ऐसे समुदाय-समूहों के वर्गीकरण से प्रसार और सुगठन की एक सुव्यवस्थित प्रणाली को समझ पाना सम्भव हो सका। प्रणालीबद्ध विकास का एक ऐसा स्वरूप तैयार हुआ जिसे पूरे देश में एक समूह से दूसरे समूह तक सतत् बनाये रखना सम्भव हो सका। इस स्वरूप से उभरते ही, प्रभुधर्म के संदेश से अछूते समुदाय-समूह, होम-फ्रंट पायनीयरों के लक्ष्य बन गये, जैसे अतीत के अभियानों में अछूते क्षेत्रों की पहचान की गई थी। दूसरी ओर, जिन समुदायों में प्रभुधर्म का संदेश पहुँच चुका था,

उन्होंने अपने आंतरिक विकास के लिये, योजना के तीन निर्धारक तत्व-व्यक्ति, संस्थायें और समुदाय - के बीच ताल-मेल बैठाने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

यह अत्यन्त उत्साहवर्धक है कि इस कार्य की प्रगति को प्रशिक्षण संस्थान की प्रक्रिया से बल मिल रहा है, जिसे प्रशिक्षित ट्यूटरों की संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से पिछले साल अनेक देशों में शुरू किये गये अभियानों से मजबूती मिली। जहाँ भी एक प्रशिक्षण संस्थान अच्छी तरह स्थापित होकर काम कर रहा है वहाँ स्टडी सर्कल, भक्तिपरक बैठकें और बच्चों की कक्षायें जैसे तीन प्रमुख क्रियाकलापों में आसानी से कई गुणा बढ़ोत्तरी हुई। सच तो यह है कि अपने बहाई मित्रों के आमंत्रण पर जिज्ञासुओं की बढ़ती भागीदारी ने इनके उद्देश्य को एक नया आयाम दिया, जिसके परिणामस्वरूप नये मित्रों ने प्रभुधर्म को स्वीकार किया। यहाँ शिक्षण कार्य के महान उद्देश्य को निष्चित रूप से एक दिशा मिलती है। ये मूल क्रियाकलाप, जो शुरू में प्रभुधर्म के अनुयायियों को लाभान्वित करने के लिये चलाये गये थे, बड़े स्वाभाविक ढंग से समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने के प्रवेश-द्वार सिद्ध हो रहे हैं। स्टडी सर्कल, भक्तिपरक बैठकें और बच्चों की कक्षाओं को एक कड़ी में जोड़कर समग्र कार्य-योजना का एक मॉडेल तैयार किया गया, जिसके उत्साहजनक परिणाम सामने आ रहे हैं। हमें पूरा विश्वास है कि इस मॉडेल के उपयोग से आने वाले वर्षों में विश्व-स्तर पर प्रभुधर्म की प्रगति की असीम सम्भावनायें सामने आयेंगी।

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र द्वारा विश्व के बहाई समुदाय को सुव्यवस्थित विकास की बेहतर समझ दिये जाने के कारण पुलकित कर देने वाली इन सम्भावनाओं को अधिक जीवंतता मिली। सहायक मंडल सदस्यों के काल ही शुरू हुये सेवा-काल से उत्पन्न अवसर का लाभ उठाते हुये अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र ने 16 दिशानिर्धारक सम्मेलनों का आयोजन वर्ष के अंतिम महीनों में किया। प्रत्येक सम्मेलन में शिक्षण केन्द्र ने अपने दो सदस्यों को भेजा। इन सम्मेलनों में "प्रशिक्षण संस्थान और सुव्यवस्थित विकास" पर दुनिया के लगभग सभी सहायक मंडल सदस्यों को पर्याप्त जानकारी उपलब्ध करायी गयी, जो उनके अथक परिश्रम से पूरे समुदाय तक पहुँचती जायेगी।

एक ऐसा समुदाय, जो नैतिक रूप से इतना सुसम्पन्न है, इतना अनुभवी है, जो दैवी अनुकम्पा से प्रेरित कार्य-योजना की ओर अपना ध्यान केंद्रित कर चुका है, आज जब विश्व के अन्य निवासियों की ओर निहारता है तो पाता है कि मई 2001 में पवित्र भूमि में हुये समारोहों के बाद, वे अनेक अव्यवस्थाओं की दलदल में और भी धंसते चले गये हैं। फिर भी, इन प्रतिकूल परिस्थितियों प्रभुधर्म को प्रगति-पथ पर प्रयाण करना है और निश्चित रूप से यह विकास-पथ पर आगे बढ़ेगा। विश्व के सम्राटों और शासको को सम्बोधित बहाउल्लाह की पातियों का हाल में प्रकाशित अंग्रेज़ी अनुवाद – "द सम्मन्स ऑफ द लॉर्ड ऑफ हास्ट्स" एक अनुकम्पा भरा तकाज़ा है कि अन्याय, आतंक और भ्रष्टाचार के खिलाफ़ उनकी चेतावनी को नज़रअंदाज़ करने का नतीजा बड़ा भयावह होगा। दुनिया में हर जगह मनुष्य की चेतना पर हो रहे हिंसक आघात उप उपायों की ज़रूरत पर ज़ोर दे रहे हैं जो बहाउल्लाह ने सुझा रखे हैं। दुनिया भर में फैले बहाउल्लाह के निष्ठावान सेवक होने के नाते प्रत्येक बहाई का यह नैतिक दायित्व है कि प्रभुधर्म के संदेश के प्रसार का, उनकी अनोखी विश्व-व्यवस्था को स्थापित करने का जो सर्वाधिक उपयुक्त अवसर हमें मिला है, उनका भरपूर उपयोग हम करें। साथ ही, तत्काल उन भौतिक साधनों का इंतज़ाम अपने

त्यागपूर्ण दान से करें जिन पर आध्यात्मिक क्रियाकलापों को कार्यरूप देना और उन्हें आगे ले चलना अनिवार्य रूप से निर्भर करता है।

हमारा अनिवार्य काम यह है कि वर्तमान संकट का हम बेझिझक और निर्भय होकर उपयोग करें और उस महान् संदेश के परिवर्तनकारी सदगुण का प्रदर्शन करें जो दुनिया की शांति सुनिश्चित कर सकता है। क्या आशीर्वादित सौन्दर्य ने अपने इन सारगर्भित शब्दों से हमें शक्तिसम्पन्न और आश्वस्त नहीं किया है? "विश्व की घटनाओं से निराश मत हो!" अपने स्नेहिल परामर्श में वह आगे कहते हैं, "मैं ईश्वर की सौगंध खाता हूँ, आनन्द का सागर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है, क्योंकि हर अच्छी चीज़ की रचना तुम्हारे लिये की गई है और समय की ज़रूरत के मुताबिक तुम्हारे सामने प्रकट होगी।"

संदेहों से विचलित हुये बगैर, बाधाओं की परवाह किये बिना, वर्तमान योजना के साथ आगे बढ़ें।

-विश्व न्याय मंदिर